International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाँसा गढ़ के भित्ति चित्रों में शासकीय वैभव का चित्राकंन

डॉ. पवन कुमार जाँगिड.
सह आचार्य–चित्रकला, श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी राजकीय स्नातकोत्तरमहाविद्यालय, किशनगढ (राजस्थान)

शोध सार : राजस्थान में मारवाड़ क्षेत्र के नागौर जिले में डिडवाना तहसिल का छोटा सा गांव बाँसा स्थित है जहाँ के गढ़के भित्ति चित्रों में शासकीय वैभव का शानदार चित्रांकन है। यहाँ के सामंत ने अपने महल में राजस्थान के प्रसिद्ध राजा – महाराजाओं के व्यक्ति चित्रों के साथ ही शिकार से सम्बन्धित चित्राकंन करवाया। यहाँ महिलाओं के विविध रूपाकंन के साथ–साथ अलंकरणों का चित्रण भी देखा जा सकता है। 19वीं सदी के इन चित्रों पर कम्पनी शैली का पूर्ण प्रभाव है। इन चित्रों को प्रत्यक्ष देखकर प्रकाशित करने के उद्देश्य से इस मौलिक पत्र का निर्माण किया है।

बीज शब्द : बाँसा, सामंत, भित्ति चित्र, व्यक्ति चित्र, राजा, ईडर,

मूल आलेख : भारतीय चित्रकला के परिदृश्य में राजस्थानी चित्रकला का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।लोक–संस्कृति एवं सामंती परिवेश में पनपी यह कला न तो किसी एक स्थान पर विकसित हुई और न ही किसी एक व्यक्ति द्वारा परिपोषित हुई है। वास्तव में राजस्थान में जितनी भी रियासतें रही, वहाँ की राजधानियों, प्रमुख नगरों, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों में यह कला समय–समय पर पल्लवित हुई है।भारत में प्राचीन काल से ही भित्ति चित्रण परम्परा का विस्तार देखने को मिलता रहा है। इस दृष्टि से राजस्थान का भी विशेष स्थान रहा है। इस प्रदेश की भव्य कलात्मक हवेलियाँ, किले, महल, देवालय, छतरियाँ, गढ़, कुवें, इत्यादि स्थापत्य के नमूने अथवा यहाँ की मूर्तिकला, भित्तिचित्र, लघुचित्र, ग्रंथचित्र या फिर लोक कलाएँ, सभी राजस्थान के कलात्मक वैभव की कीर्तिं को बयाँ करते हैं। उन पर बने भित्ति चित्रों का सांस्कृतिक एवं कलात्मक वैभव अनुपम रहा है। राजस्थान के राज्याश्रय मे फली फूली लघुचित्र शैलियों के साथ–साथ भित्ति चित्रण परम्परा का विकास और विस्तार होता रहा है। यहाँ के बड़े–बड़े राज दरबारों की देखा–देखी

छोटे–छोटे जागिरदारों, ठिकानों, सामन्तों एवं महाजनों ने हवेलियों में भित्ति चित्रण की इस परम्परा को जीवित रखा।

मारवाड़ के कलात्मक इतिहास की अगर बात करे तो तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ ने सातवीं शताब्दी में श्रृंगधर नाम के चित्रकार का उल्लेख मरूप्रदेश में किया है। जिससे ज्ञात होता है कि मारवाड़ में चित्रकला की पूर्व परम्परा रही थी। नाडोल, घाणेराव, कुचामन, मेडता, पाली, सोजत, जालौर, नागौर, पोकरण, जोधपुर जैसे स्थलों पर चित्रण का कार्य हुआ है। मारवाड़ की सीमाओं के अन्तर्गत विकसित चित्रकला एवं उसके चित्रण केन्द्र प्रायः राठौड़ शासकों के ही रहे हैं, फिर भी स्थानीय चित्रकारों व उनके प्रश्रय के अनुरूप उनमें कलात्मक भिन्नतायुक्त मौलिक चित्रण पद्धतियों का विस्तार होता गया। मारवाड़ में कला के राजकीय मान को देखकर सामन्तों ने भी कला को प्रोत्साहित किया तथा केवल जोधपुर में ही नही वरन् सारे मारवाड़ में 19वी शताब्दी के आरम्भिक समय में चित्र बने – कुचामन, घाणेराव, नागौर, पाली, जालौर इत्यादि प्रमुख नगरों में चित्र–शालायें बनी तथा सहस्त्रों की संख्या में चित्र बनने का उल्लेख मिलता है।[1] सामन्तों व रजवाडों ने भी अपने–अपने सामर्थ्य के अनुसार छोटे–छोटे गढ़ व धनाढ्य सेठों ने हवेलिया बनवाई और उनमें भित्ति चित्राकंन करवाया। यह परम्परा कम्पनी शैली के साथ मिलकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक चलती रही। हालाकिं चित्रण के स्त्तर में गिरावट आई लेकिन विषयों की विविधता में विस्तार हुआ।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : राठौड़ शासकों एवं उनके वंशजों ने मारवाड़ क्षेत्र की चित्रण परम्पराओं को विकसित किया जिनका प्रभाव जैसलमेर, बाड़मेर, अजमेर, शेखावाटी क्षेत्र के स्थानों पर रहा है। जोधपुर में भी छोटे–छोटे नगरों में बने चित्रों की एक स्वतंत्र शैली थी जो नागौर, कुचामन, जालौर, तथा जैसलमेर शैली कहलाती थी। यहाँ के ग्राम्य चित्र भी अपना एक स्थान रखते हैं जो अत्यधिक संख्या में चित्रित हुए हैं। यहाँ के प्रधान नगरों में चित्रकला के उत्तम उदाहरण मिलते हैं। कुचामन, मेड़ता, धनकोली, मौलासर, बाँसा–निमोद, भदलिया, पांचवा आदि अनेकों स्थान हैं, जहाँ भित्ति चित्र बने तथा छोटे–छोटे ठिकानेदार अर्थात जागीरदारों में भी चित्रों का व्यसन देखने को मिला है। इन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गांवों के ठिकानेदार अर्थात जागीरदारों ने अपने–अपने सामर्थ्य के अनुसार छोटे–छोटे गढ़ बनवाये और धनाढ्य सेठों ने हवेलिया बनवाई और उनमें भित्ति चित्राकंन भी करवाया। उन्ही में से एक है मारवाड़ क्षेत्रीय नागौर जिले की डीडवाना तहसील का छोटा सा बाँसा गांव का गढ़।

अध्ययन के उद्देश्य :–भारतीय एवं राजस्थानी भित्ति चित्रकला के इतिहास एवं इसके विस्तार तथा प्रमुख राजदरबारों में विकसित चित्रकला का विकास के साथ भित्ति चित्रों के बारे में जानना। छोटे–छोटे जागिरदारों, ठिकानों, सामन्तों एवं महाजनों की हवेलियों, गढों, मंदिरों में बने भित्ति चित्रण की परम्परा का विकास और विस्तार का अध्ययन कर अब तक ओझल रहे बाँसा गाँव के भित्ति चित्रों को प्रकट करना। यहाँ के भित्ति चित्रण को प्रत्यक्ष देखना और इस ऐतिहासिक भित्ति चित्रण विरासत को ऊजागर करना। इसके इतिहास व भित्ति चित्रों का अध्ययन कर वहां की कला, रहन–सहन व संस्कृति को जानने का प्रयत्न करना।

शोध प्रारूप : प्रस्तुत शोध पत्र में बाँसा गढ के भित्ति चित्रों, शिलालेखों, मूर्तियों एवं इतिहास को अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया। इसके लिए इतिहास का अध्ययन कर तथ्यों को एकत्रित किया और गढ के भित्ति चित्रों को प्रत्यक्ष देखकर फोटोग्राफी की साथ ही गढ में रह रहें निवासियों से साक्षात्कार कर इस मौलिक शोध पत्र का निर्माण किया है।

भौगोलिक स्थिति एवं इतिहास :– बाँसा गांव राजस्थान के नागौर जिले के कुचामन से डीडवाना की ओर जाने वाले मार्ग के पास स्थित है। यह छोटा सा गाँव पहले कायमखानियों फिर जोधपुर शासकों के अधीन रहा। कायमखाँ को हिसार, जैनूद्दीन खाँ को नारनौल व जबरूदीन खाँ को चरखी–दादरी–कल्याणपुरा के जागीरदार बनाये गये। तीनों भाईयों व इनकी संतानों ने धीरे–धीरे अपनी जागीरों का विस्तार किया व बाद में नवाबियाँ प्राप्त की। इनकी नवाबी लगभग 300 वर्षों तक विभिन्न भागों में रही।[2] कायमखां रासो एवं शेखावाटी प्रकाश के अनुसार कायमखाँ के 5 पुत्र थे। कायमखाँ तथा इनके पुत्रों एवं वंशजों ने राज्य के विभिन्न भागों पर अपनी जागीरों का विस्तार किया था। जैनुद्दीन की हुकुमत

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नारनौल पर रही। इसका पुत्र नसीरूद्दीन खाँ था जिसके बेटे अलाउद्दीन ने बेरी (डीडवाना से 23 कि.मी. पूर्व में) में राजधानी स्थापित की और वाकयात के अनुसार इसने 1494 ई. में यहाँ गढ़ बनाया। वि. 1556 तक इसने हुकूमत की। अलाउद्दीन के दो पुत्र थे जिनके नाम आसलजी और तोगाजी थे। आसलजी, तोगाजी, अब्दुलखैर, मुल्कफरीद और हबीबखाँ क्रमशः नवाब हुये। इसने अपनी राजधानी बाँसा में परिवर्तित कर ली।[3]सत्तावन गांवों के कारण यह इलाका सत्तावनी के नाम से भी मशहूर हुआ और झाड़–झंकाड़ों की सूनी बेल्ट में गाँव बसाकर राज्य करने के कारण यह पूरी बेल्ट (पट्टी) ''झाड़ोद पट्टी'' कहलाने लगी। बाँसा में नवाब मुल्क हबीब खाँ शासक रहे। हबीब खाँ निःसंतान था इन्होंने अपने भाई हयात् खाँ के पुत्र अमीर खाँ को गोद लिया। बाँसा पर अमीर खाँ अन्तिम कायमखानी नवाब हुआ।[4]दरगाह मेंअमीर खाँ के शिलालेख व मजारें देखी जा सकती है (चित्र सं.1 व 2) :–

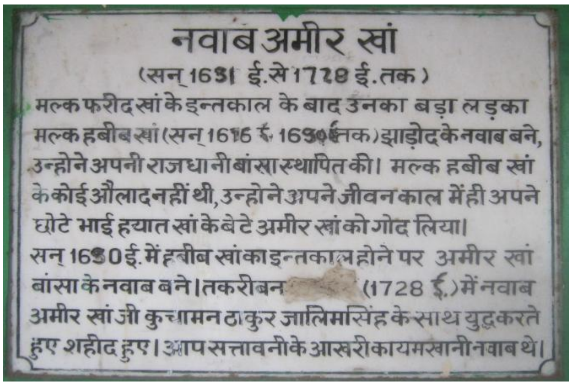

चित्र सं. 1बांसा दरगाह का शिलालेख   चित्र सं. 2अमीर खाँ की दरगाह

अमीर खाँ वि.सं. 1785 में कुचामन के मेड़तिया ठा. जालिम सिंह से लड़कर मारा गया। बाँसा गाँव में आज भी नवाब अमीर खाँ की दरगाह (मजार) बनी है। गाँव में स्थित अमीर खाँ की दरगाह का शिलालेख एवं बहुत सी मजारे हैं, जो वीरगति को प्राप्त योद्धाओं के प्रतीक स्वरूप बनी हैं। इससे सम्बन्धित एक बात और देखने को मिली कि कुचामन के पलाड़ा गाँव के पास राजकीय विद्यालय टोरड़ा के प्रांगण की दीवार पर लगी 31/2 फीट लम्बी मूर्ति (संवत् 1414) जिसमें बाँसा गाँव के नूरखां नामक व्यक्ति से युद्ध होने पर सिर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धड़ से अलग होने के बाद टोरड़ा की जमीन पर गिरने का उल्लेख भी मिलता है।[5] यह एक विरोधाभास तथ्य है। अमीर खाँ की मृत्यु के पश्चात् झाड़ोद पट्टी के गाँव कायमखानियों के हाथ से निकल गये। झाड़ोद की पट्टी में 57 गाँव थे जो आगे चलकर जोधपुर राजाओं के अधीन हो गये। यह गाँव 1728 ई. तक कायमखानियों फिर जोधपुर रियासत के अधीन रहा। बाँसा नवाब अमीर खाँ के साथ कुचामन ठा. जालिमसिंह मेड़तिया के निर्णायक युद्ध के पश्चात् संवत् 1808 में यह जमींदारी कुचामन वंश के मेड़तिया को प्राप्त हो गयी।

बाँसा में माताजी की ढ़ाणी के शिलालेख में संवत् 1545 का उल्लेख मिलता है। यहाँ के शिला लेख मूर्तियों के नीचे लिखे हुये हैं। यहाँ की प्राचीनता के प्रमाण मूर्तियों के शिलालेखों, अमीर खाँ की दरगाह के शिलालेख इत्यादि में देखे जा सकते है। इन तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाँसा गाँव प्राचीन समय से ही अस्थित्व में रहा है।

जोधपुर महाराज बख्तसिंह और अभयसिंह पुत्र रामसिंह का युद्ध हुआ था। इस युद्ध में कुचामन संस्थापक जालिमसिंह मारा गया। युद्ध में जीत बख्तसिंह की हुई। उसने कायमखानी जमींदारों को हटाकर झाड़ोद पट्टी में राजपूतों की केसरी गोत को जागीरें बख्शी थी। मेड़ता शासक के वंशज होने के कारण ये राजपूत मेड़तिया कहलाए। इस क्षेत्र में मीठड़ी, मारोठ और कुचामन जमकर यहाँ से अन्यत्र फैलते गए। इन पर मारवाड़ अधिपति एवं कुचामन शासक की सदैव अनुकम्पा बनी रही। मुख्य गौत्र रघुनाथ सी गोत, किसोर गोत और हठी सी गोत का वर्चस्व रहा। रघुनाथ सिंह की गोत्र की तीसरी शाखा के वंशज बाँसा गाँव में रहने का उल्लेख मिलता है।[6] इसी शाखा के सूरजभान, पन्नेसिंह, फतेहसिंह तथा नारायणसिंह क्रमशः उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंनें लगभग 1950 ई. तक शासन किया। वर्तमान में यह नारायण सिंह के पुत्र सुरजनसिंह के अधीन है तथा इनका परिवार गढ़ में रह रहा है।

बाँसा गढ़ के भित्ति चित्र :–अमीर खाँ के शिला लेख के अनुसार सन् 1616 ई. से 1690 ई. तक हबीब खाँ झाड़ोद के नबाब रहे। इसी समय इसने अपनी राजधानी बाँसा में स्थानान्तरित की। बाँसा गढ़ की नींव इन नवाबों के समय की है परन्तु निर्माण लगभग इसके बाद का रहा। बाद में मेड़तियाशासकों इसका विस्तार किया तथा रानी महल बनवाया। ऊपर की मंजिल पर बने रानी महल में सुन्दर भित्ति चित्र देखे जा सकते हैं। इन भित्ति चित्रों का निर्माण मेड़तिया वंश के ठाकुरों के समय का है। गढ़ के बाहर पूर्वी दीवार पर बने चित्र यहाँ बने चित्रों में पहले बने प्रतित लगते हैं जबकि गढ़ के अन्दर बने भित्ति चित्र इनसे परवर्ती हैं।

कुचामन, बाँसा, निमोद, धनकोली, जिलिया गांव आस–पास स्थित है जहां छोटे–छोटे गढ़ बने है। धनकोली व बाँसा बिलकुल आस–पास स्थित है। धनकोली में प्राचीन समय में आवागमन के समय बनजारों के काफिले रुकते थें। बादशाह–राजा, महाराजा युद्ध के दौरान अपनी फौज की रसद का जिम्मा इन्हीं बनजारों को सौंपते थे। बीकानेर और शेखावाटी से चलकर दक्षिण में जाने के लिए पहले कई मार्ग थे। इन मार्गों के बीच में पड़ने वाले धनकोली, बाँसा, कुचामन, डीडवाना आदि स्थानों ये बनजारे रुकते तथा विशेष रूप से खाद्य सामग्री, मसाले, कपड़ा, रंग, फिटकरी, हिरमिच, पीलिया भाटा, नमक इत्यादि का आदान–प्रदान करते थे। धनकोली गढ़ के भित्ति चित्रों में बने व्यापारी का चित्र इसकी प्रमाणिकता को सिद्ध करता है। इस प्रकार महाराजा बख्तसिंह ने कायमखानी जमीदारों की सहमति के बाद इस क्षेत्र में मेड़तियां राजपूतों को जागीदार बनाया। धनकोली गढ़ में विविध भित्ति चित्र मिलते हैं। सेठ साहूकारों की बहु बेटियों को लाने ले जाने के लिए विश्वसनीय कायमखानियों के ऊँट ही भाड़े पर भेजे जाते थे। ऊँटों का चित्रण, उन पर सवार यात्रीगण, व्यापारिक मार्ग में विश्राम स्थल धनकोली एवं राजाओं कि ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण यहाँ के भिति चित्रों में देख सकते हैं।

बाँसा नवाब अमीर खाँ तथा कुचामन ठाकुर जालिम सिंह मेड़तिया के निर्णायक युद्ध से संवत् 1808 में यह जमींदारी कुचामन वंश के मालम सिंह मेड़तिया को जोधपुर नरेश

की अनुकम्पा से सहज ही प्राप्त हो गई।[7] जोधपुर महाराज बख्तसिंह और अभय सिंह के पुत्र राम सिंह के बीच सोजत के पास 'लोढ़ावास' में युद्ध हुआ। इसमें कुचामन ठा. जालिमसिंह ने साथ दिया था। इस सहयोग के फलस्वरुप महाराजा बख्तसिंह ने ''झाड़ोद पट्टी'' में राजपूतों को जागीरे प्रदान कीं। हालांकि सोढ़ावास युद्ध में जालिमसिंह मारा गया था।

मारवाड़ के सांभर, डीडवाना, पचभद्रा एवं सुजानगढ़ में नमक बनता था। राजपुताने से नमक और अनाज गुजरात और गंगा प्रदेशों को जाता था। मारवाड़ के प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों से व्यापारी अपना माल ले जाने के लिए कई मार्ग बना रखे थे। व्यापारी भिवानी और मारवाड़ के मध्य शेखावाटी मार्ग पर अनेक ठाकुरों द्वारा जकात (व्यापारिक कर) ली जाति थी। यह तथ्य भी बांसा–धनकोली के व्यापारिक मार्ग एवं ऊँटों के चित्रण से सत्य प्रतीत होता है।[8] मारवाड़ की तरह शेखावाटी के शहर भी व्यापारिक स्थान रहे हैं। व्यापार मुख्य रूप से ऊँटों द्वारा हीहोता था। ऊँटों द्वारा दिल्ली, पंजाब, पश्चिम में पुष्कर, दक्षिण में जयपुर, अलवर, हिण्डौन तथा उत्तर मे गोगामेड़ी तक व्यापारिक कार्यों हेतु आया–जाया करते थे।[9]

बाँसा गाँव के गढ़ में भित्ति चित्रांकन मिलता है। (चित्र सं. 4) यहाँ माताजी की ढ़ाणी में प्राचीन मूर्तियाँ तथा कुछ खण्डित मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों के नीचे लेख अंकित है जिसमें संवत् 1545 का उल्लेख है। (चित्र सं. 3)इससे प्रतीत होता है कि यहाँ कला का प्रचलन पहले से था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चित्र सं. 3 *माताजी की ढ़ाणी (बाँसा) में प्राचीन मूर्तियां एवं शिलालेख*

चित्र सं. 4 *बाँसा गाँव का गढ़ एवं बाहरी भिति पर चित्रांकन*

गढ़ के सबसे ऊपर के रानी महल में तथा बाहर की दीवारों पर चित्र बने हैं। बाहर की तरफ विशेष रूप से घुड़सवार, हाथीसवार, ऊँटसवार अंकित है।(चित्र सं. 4)केवल रानी महल के अन्दर की दीवारों पर सुन्दर चित्रांकन हैं। महल के प्रमुख चित्रों में राजकुमार द्वारा जंगली सूअरों का शिकार दृश्य, श्रीमान महाराजा मानसिंह (जयपुर), राजकुमार द्वारा शेर का शिकार दृश्य, हाथी पर सवार राजकुमारों द्वारा जंगली सूअर का शिकार, मचान पर बैठकर राजकुमार द्वारा शेर का शिकार दृश्य, गेंडे का शिकार दृश्य, श्री महाराणा प्रताप सिंह (चित्तौड़), महाराणा श्री पृथ्वीराज चौहान (अजमेर), सर महाराजा गंगासिंह कर्नल (बीकानेर), सर महाराजा प्रतापसिंह कर्नल (ईडर), जोधपुर महाराजा के अतिरिक्त भगवान श्री कृष्ण, श्री रामचन्द्र जी एवं विविध नारी आकृतियाँ अंकित है। गढ़ के मुख्य द्वार के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पास बैठक का कमरा है जिसमें विविध बेल बटूं बने हैं। यहाँ के मुख्य द्वार पर भी चित्रांकन व अलंकरण बने हैं। प्रमुख चित्र इस प्रकार है।

जंगली सूअर व *गेंडे* के शिकार का दृश्य(चित्र सं. 5 एवं 6) :—जंगली सूअर के शिकार के दृश्यचित्र में चित्रकार द्वारा असमतल पहाड़ी भूमि पर शिकार का दृश्य चित्रित किया है जिसमें राजकुमार को सफेद घोड़े पर सवार होकर जंगली सूअर का शिकार करते हुये दर्शाया है। चित्रकार ने घोड़े, सूअर, कुतों व शिकार की गति का अद्भुत चित्रण किया है जो देखते ही बनता है। साथ ही चित्रकार ने पृष्ठभूमि में प्रकृति का आकर्षक चित्रण किया है। पिछे एक ओर घुड़सवार का चित्रण है। सूअर, घोड़े, शिकारी कुतें, नदी, बतकें, पेड़—पोघे व शिकार करने की मुद्राओं का सुन्दर चित्रण किया गया है। वेशभूषा में कम्पनी शैली का पूर्ण प्रभाव है। इसी प्रकार *गेंडे के शिकार दृश्य में जंगल की ओर जान बचाकर भागते हुये गेंडों को हाथी पर सवार शिकारियों द्वारा बन्दूकों से शिकार करने की मुद्रा में आकषर्क चित्रण किया है।*

(चित्र सं. 5) *जंगली सूअर के शिकार का दृश्य,*(चित्र सं. 6) *गेंडे के शिकार का दृश्य बाँसा गढ़,*

मारवाड़ में शिकार के दृश्य चित्रण की परम्परा का चित्रांकन कई स्थानों पर मिलता है। मधुप्रसाद अग्रवाल ने 'मारवाड़ की चित्रकला' में सूअर के शिकार दृश्य का वर्णन किया है जिसमें घाणेराव के अजीत सिंह को शिकार करते दर्शाया है, जो दानाभाटी ने 1811 ई. में चित्रित किया था। यह चित्र कुंवर संग्रामसिंह, जयपुर के संग्रह में है।[10] इसी प्रकार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाँसा एवं अजीतसिंह वाला चित्र दोनों की विषय–वस्तु, पृष्ठभूमि एवं चित्रांकन परम्परा समान है। उस समय मारवाड़ दरबार में दाना भाटी, माधोदास भाटी एवं रामसिंह भाटी (1807) आदि कई चित्रकार थे जिनमें से रामसिंह भाटी को शिकार के चित्रों में महारथ हासिल होने का उल्लेख मिलता है।[11] आगे चलकर इसी परम्परा का अनुसरण मारवाड़ के ठिकानों में बने भित्ति चित्रों में देखा जा सकता है। हालाकिं चित्रण के स्तर में बहुत अन्तर है। ऐसे ही बाँसा गढ़ में विभिन्न शिकार दृश्य चित्रित मिलते हैं। इसी क्रम में यहाँ का शेर के शिकार वाला दृश्य भी सुन्दर बना है। (चित्र सं. 7) इस चित्र में एक राजकुमार को कटार से शेर पर प्रहार करने की मुद्रा में चित्रांकित किया है। शेर को क्रोधावस्था में राजकुमार की ओर झपटने की मुद्रा का चित्रण, पास ही खून से लथपथ एवं मरणासन्नावस्था में व्याकुल पड़े हिरण, जान बचाकर भागते खरगोश एवं पेड़ के पीछे छुपकर बैठे व्यक्ति इत्यादि का चित्रांकन इस चित्र को आकर्षक बनाते हैं। एक दृश्य में मंचान व पेड़ों पर बैठकर शिकारियों द्वारा शेर का शिकार करते हुये सुन्दर चित्र बना है।

(चित्र सं. 7) शेर के शिकार वाला दृश्य, *बाँसा गढ़,* (चित्र सं. 8) ग्रामिण महिला

जोधपुर के महाराजा विजयसिंह के दरबार में उदयराम (1751–1790 ई.) एक कुशल चित्रकार रहा था जिसने मारवाड़ के लघुचित्रों का विस्तार किया उसने अनेक शिकार के दृश्य एवं व्यक्ति चित्रों का चित्रण किया था। 19वीं सदी में इसी परम्परा के अनुसार बाँसा गढ़, कुचामन के किले में शिकार के दृश्य एवं व्यक्ति चित्रण का भित्ति चित्रांकन किया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गया। हालाकिं इनमें मारवाड़ शैली का प्रभाव तो केवल विषयों में देख सकते है परन्तु चित्रण शैली, वेषभूषा, हथियार इत्यादि पर कम्पनी शैली का सम्पूर्ण प्रभाव है।

व्यक्ति चित्रण :–महल के प्रमुख चित्रों में शिकार करते हुये व्यक्तियों को विभिन्न मुद्राओं में चित्रित किया गया है। अनेक राजा–महाराजाओं को प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है जैसे श्रीमान महाराजा मानसिंह (जयपुर), श्री महाराणा प्रताप सिंह (चित्तौड़)(चित्र सं. 9), महाराणा श्री पृथ्वीराज चौहान (अजमेर)(चित्र सं. 10), सर महाराजा गंगासिंह कर्नल (बीकानेर), सर महाराजा प्रतापसिंह कर्नल (ईडर), जोधपुर महाराजा के अतिरिक्त विविध नारी आकृतियाँ अंकित है। इन की वेशभूषा कम्पनी शैली के समान है। हाथ में हथियार लिए राजसी ठाठ को दर्शाते हैं। नारी आकृतियों को पारदर्शी चुनरी, साड़ी, घाघरा, कब्जा व पेरों में भारी आभूषण पहने चित्रित किया गया है। इन चित्रों में सुन्दर भावाभिव्यक्ति है।(चित्र सं. 8)

(चित्र सं. 9)श्री महाराणा प्रताप सिंह (चित्तौड़) एवं (चित्र सं. 10)महाराणा श्री पृथ्वीराज चौहान (अजमेर)**बांसा गढ़**

महाराणा प्रताप सिंह (चित्र स. 9) – उदयपुर, मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा थे। उनका नाम इतिहास में वीरता, शौर्य, त्याग, पराक्रम और दृढ प्रण के लिये अमर है। उन्होंने मुगल बादशहा अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और कई सालों तक संघर्ष

किया। हल्दीघाटी के युद्ध में और देवर और चप्पली की लड़ाई में महाराणा प्रताप को सर्वश्रेष्ठ राजपूत राजा और उनकी बहादुरी, पराक्रम, चारित्र्य, धर्मनिष्ठा, त्याग, के लिए जाना जाता था। बांसा गढ़ में बने चित्र व राजा रविवर्मा द्वारा बनाये गए चित्र में बहुत समानता देखी जा सकती है।

पृथ्वीराज तृतीय (चित्र सं. 10) – जिनको पृथ्वीराज चौहान कहा जाता है। प्रसिद्ध ग्रन्थ पृथ्वीराज रासो जिसको राजपूत दरबारों द्वारा बड़े पैमाने पर संरक्षण दिया गया था, पृथ्वीराज को एक महान नायक के रूप में चित्रित करता है। पृथ्वीराज के वंश को बाद के काल में राजपूत वंशों में से एक के रूप में वर्गीकृत किया गया था। समय के साथ, पृथ्वीराज को एक देशभक्त हिन्दू योद्धा के रूप में चित्रित किया गया। बांसा ठाकुर ने अपने महल में इनका चित्रांकन करवाया। हाथ में भाला, धनुष बान व ढ़ाल लिये राजपूत वेशभूषा में रोपदार चित्रण किया गया है।

(चित्र सं. 11) महाराजा श्री गंगासिंह (बीकानेर), (चित्र सं. 12)श्रीमान् महाराजा मानसिंह (जयपुर),

महाराजा श्री गंगासिंह (बीकानेर) (चित्र सं. 11) – राजपूतों के प्रसिद्ध राठौड़ वंश में जन्मे गंगासिंह बीकानेर रियासत के भूतपूर्व महाराजा थे। उन्हें अपने राज्य के एक आधुनिक सुधारवादी भविष्य दृष्टा राजा के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने कुख्यात

'छप्पनिया काल' की हृदय–विदारक विभीषिका देखी थी, तभी गंगा सिंह अपनी रियासत के लिए पानी का इंतजाम एक स्थाई समाधान के रूप में करने का संकल्प लिया था और इसीलिये सबसे क्रांतिकारी और दूर दृष्टिवान काम, जो इनके द्वारा अपने राज्य के लिए किया गया वह था – किसी भी कीमत पर पडौसी पंजाब की सतलज नदी का पानी 'गंग–केनाल' के ज़रिये बीकानेर जैसे सूखे क्षेत्र तक लाना और नहरी सिंचित–क्षेत्र में किसानों को खेती करने और बसने के लिए मुफ्त ज़मीनें देना । बांसा गढ़ के ठाकुरों ने इन सबको आर्दश मानकर चित्रित करवाया।

श्रीमान् महाराजा मानसिंह (जयपुर) (चित्र सं. 12) – कछवाहा वंश से संबन्धित जयपुर के अंतिम शासक थे। उन्होंने 1922 से लेकर राज्य के भारत में विलय (1949) तक शासन किया। इसके बाद उन्होंने 1949 से लेकर 1956 तक राजस्थान के राजप्रमुख के रूप में कार्य संभाला। इस प्रकारउपरोक्त राजाओं के व्यक्ति चित्र बांसा गढ़ के ठाकुरों ने अपने महल में बनवाये। छोटे–छोटे ठाकुर इन राजपूत राजाओं का चित्रण करवाकर राजपूत वंश की गौरवमय गाथा को बनाये रखना चाहते थे।*बाँसा गढ़ के भित्ति चित्रों की मुख्य विषय–वस्तु* घुड़सवार, हाथीसवार, ऊँटसवार, शिकार दृश्य, आखेट, राजा–महाराजा के व्यक्ति चित्रों के अतिरिक्त श्री कृष्ण, श्री रामचन्द्र जी एवं विविध नारी आकृतियाँ अंकित है। सबसे अधिक शिकार दृश्य, आखेट के दृश्य बहुत ही सुन्दर व अधिक चित्रित है। राजस्थान के राजा–महाराजाओं के व्यक्ति चित्र भी सुन्दर चित्रित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ : –

1. गोस्वामी, प्रेमचन्द – राजस्थान की लघु चित्र शैलियां, जयपुर, 1972, पृ.सं. 48
2. नसीम एवं गौराण, हबीब खाँ – राजस्थानी लोक संस्कृति एवं कायमखानी समाज, जोधपुर, 2007, पृ.सं. 17
3. मिश्र, रतन लाल – शेखावाटी का नवीन इतिहास, मंडावा (झुंझुनूं), 1998, पृ.सं. 116–117
4. आजाद, मुबारक खान – धनकोली : आज तक, धनकोली, 2004, पृ.सं. 51

5. सर्वेक्षण – जिलेवार सांस्कृतिक सर्वेक्षण नागौर, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, 1996, पृ.सं. 62

6. आजाद, मुबारक खान – धनकोली : आज तक, धनकोली, 2004, पृ.सं. 55–88

7. आजाद, मुबारक खान – धनकोली : आज तक, धनकोली, 2004, पृ.सं. 50–51

8. रस्तोगी, साधना – मारवाड़ का शौर्य युग, जयपुर, 1975, पृ.सं.19–20

9. आर्य, हरफूल सिंह – शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, जयपुर, 1987, पृ.सं.197

10. अग्रवाल, मधुप्रसाद – मारवाड़ की चित्रकला, दिल्ली, 1993, पृ.सं. 130

11. वशिष्ठ, धर्मवीर – मारवाड़ की चित्रांकन परम्परा एवं चित्रकार, जयपुर, 2011, पृ. सं. 72–73